चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति बिहार के अध्यापक-शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की जागरूकता एवं अभिवृत्ति: एक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

के

शिक्षा संकाय के अंतर्गत

पीएच०डी० हेतु प्रस्तुत

शोध प्रस्ताव

शोध पर्यवेक्षक

Shahina Mateen

डॉ. शाहीना मतीन

सहायक प्राध्यापक

मिथिला बी०एड० महाविद्यालय, दरभंगा

शोधार्थी

Kajal Kumari

नाम: काजल कुमारी

क्रमांक: 03

विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा

Scanned with OKEN Scanner

प्रस्तावना

भारत सरकार ने देश में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और मात्रा को बढ़ाने के लिए विभिन्न आयोगों के गठन सहित कई प्रयास किए हैं। हालांकि, इन प्रयासों के बावजूद, कई चुनौतियां हैं। भारत में कई उच्च शिक्षा संस्थान अपर्याप्त सरकारी धन के कारण संघर्ष करते हैं, जिससे सीमित संसाधन और सुविधाएं होती हैं। उच्च शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने के प्रयासों के बावजूद, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों और सामाजिक-आर्थिक वर्गों के बीच असमानताएं बनी हुई हैं। कई विश्वविद्यालयों और कॉलेजों द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता एक चिंता का विषय है, और स्नातकों में अक्सर रोजगार के लिए आवश्यक कौशल की की कमी होती है। भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली अक्सर महत्वपूर्ण सोच और रचनात्मकता पर याद रखने पर जोर देती है। यह बदलते सामाजिक और नौकरी बाजार की जरूरतों के अनुकूल होने में धीमा हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप एक कठोर और पुराना पाठ्यक्रम होता है। भारत में प्रतिभा पलायन का भी अनुभव होता है, क्योंकि कई शिक्षित व्यक्ति विदेशों में बेहतर अवसर चाहते हैं। भारत में राज्यों के बीच शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता में पर्याप्त भिन्नता है, जो इन असमानताओं को पाटने और समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए व्यापक सुधारों और उच्च शिक्षा में निवेश बढ़ाने की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है। उच्च शिक्षा के अज्ञात उद्देश्यों में से एक शिक्षण की सुविधा और एक प्रबुद्ध समाज को बढ़ावा देने के लिए लगातार नए ज्ञान पैदा करना शामिल है। यह अंतर्निहित निर्देश उच्च शिक्षा संस्थानों, विशेष रूप से विश्वविद्यालयों और उन्नत शिक्षण केंद्रों में संकाय सदस्यों को चल रहे अनुसंधान में संलग्न होने की उम्मीद करता है। सतत अनुसंधान की इस अंतर्निहित अपेक्षा ने कई विदेशी उच्च शिक्षा संस्थानों को मान्यता दी है और उनकी अनूठी स्थिति स्थापित की है। भारत में अपने उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में अनुसंधान को शामिल करने की एक लंबी परंपरा है। 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी), जो स्वतंत्रता के बाद से एक महत्वपूर्ण विकास है, उच्च शिक्षा संस्थानों में अनुसंधान के महत्व पर जोर देती है।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम

शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। शिक्षक उस माली के समान हैं जो विद्यार्थी रूपी पौधों को सीचता है, उनकी काँट छाँट करता है तथा देखभाल करता है। अनेक व्यक्तियों का निर्माण करने

Kajal Kumari

Shahina Mateen

Scanned with OKEN Scanner

वाला शिक्षक एक व्यक्ति ही न होकर अपने आप में एक संस्था होता है। एच. जी. वेल्स ने शिक्षक के महत्व को बताते हुए लिखा है कि शिक्षक इतिहास का निर्माता है और राष्ट्र का इतिहास विद्यालयों में लिखा जाता है और विद्यालय अपने शिक्षकों की गुणवत्ता से बहुत भिन्न नहीं हो सकते। शिक्षक शिक्षा शैक्षिक प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। शिक्षक शिक्षा एक पूर्ण व्यावसायिक कार्य है जो प्री-सर्विस शिक्षा, प्रवेश कार्यक्रम, सेवा में प्रशिक्षण, स्टाफ विकास और निरंतर शिक्षा में होती है। हाल के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और तकनीकी प्रगति के सामने, विशेष रूप से सूचना और संचार तकनीक द्वारा पेश की गई चुनौतियों और ज्ञान की बढ़ती दर के कारण, इस क्षेत्र को विशेष जोर दिया गया है। इसलिए, एक शिक्षक का कार्य अत्यधिक सम्मानित और विशेषज्ञ होता है, चाहे वह बालवाड़ी, प्राथमिक विद्यालय, हाई स्कूल, कॉलेज या स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में पढ़ा रहा हो। शिक्षकों की आवश्यकता सभी क्षेत्रों में होती है और सक्षम शिक्षक बनने के लिए, उन्हें उनके वांछित क्षेत्रों में विशेषज्ञों द्वारा शिक्षित किया जाना चाहिए। शिक्षक शिक्षा एक विविध क्षेत्र है, जो कई विषयों और विभिन्न शिक्षण विधियों को कवर करता है। किसी भी क्षेत्र में पढ़ाना मांग है और एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। शिक्षक शिक्षा तीन चरणों में प्रदान की जाती है: (1) प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की तैयारी, (2) माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की तैयारी और (3) महाविद्यालय स्तर पर शिक्षकों की तैयारी। प्राथमिक स्तर पर D.El.Ed. पाठ्यक्रम जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों (DIETs) या प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों (PTTIs) में करते हैं। माध्यमिक स्तर पर B.Ed. शिक्षा कॉलेजों (CES) या शिक्षक शिक्षा कॉलेजों (CTEs) या शिक्षा में उन्नत अध्ययन संस्थानों (IASEs) में करते हैं। B.Ed. कॉलेजों में काम करने वाले कॉलेज स्तर के शिक्षक, अपना प्रशिक्षण (M.Ed.) शिक्षा के स्नातकोत्तर विभागों में करते हैं। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने 2014 में अपने सभी पाठ्यक्रमों में बहुत फेरबदल किया जिसके अंतर्गत एक वर्षीय बी०एड० एवं एम०एड० पाठ्यक्रम दो वर्ष में बदल गया तथा चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम एक नए पाठ्यक्रम के रूप में प्रारंभ किया गया। इस पाठ्यक्रम की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें 12वीं उत्तीर्ण करने के बाद ही नामांकन लिया जा सकता है। वैसे छात्र जोकि अपना कैरियर शिक्षक के रूप में चुनना चाहते हैं वे इसमें नामांकन लेकर अपना समय और धन बचा सकते हैं।

Kajal Kumari

Shahina Mat...

Scanned with OKEN Scanner

चार वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम

NCTE अधिनियम 2014 के तहत चार वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम को शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने और उसे मानकीकृत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस अधिनियम ने यह सुनिश्चित किया है कि केवल वे संस्थान जो NCTE द्वारा मान्यता प्राप्त हों, ही बी.एड. पाठ्यक्रम चला सकें, ताकि शिक्षा का स्तर उच्च हो। पाठ्यक्रम में विषय ज्ञान के साथ-साथ शिक्षण विधियाँ, शैक्षिक मनोविज्ञान, कक्षा प्रबंधन, और विद्यार्थियों के विकास पर भी ध्यान दिया गया है। इसका उद्देश्य शिक्षक-प्रशिक्षुओं को एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करना है, जिससे वे विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को समझ सकें और प्रभावी रूप से उनका मार्गदर्शन कर सकें। NCTE अधिनियम के तहत, चार वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रायोगिक अनुभव भी महत्वपूर्ण है, जिसमें इंटर्नशिप, कार्यशालाएँ और कक्षा में शिक्षण अभ्यास शामिल होते हैं, ताकि शिक्षक वास्तविक शैक्षिक स्थितियों का सामना कर सकें। इसके अलावा, पाठ्यक्रम में आधुनिक शैक्षिक विधियाँ जैसे तकनीकी शिक्षण, ऑनलाइन शिक्षा और विभिन्न शैक्षिक संसाधनों का उपयोग भी शामिल किया गया है, जिससे शिक्षक अपनी कक्षाओं में अधिक प्रभावी और आकर्षक तरीके से शिक्षा दे सकें। इस प्रकार, NCTE अधिनियम 2014 के तहत चार वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम को इस तरह से डिज़ाइन किया गया है कि शिक्षक न केवल ज्ञान का प्रसार करें, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहायक भी बनें, और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में सक्षम हों।

चार वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की संरचना में पहले वर्ष में शिक्षा की मूल बातें, शैक्षिक मनोविज्ञान, और शिक्षक के रूप में कार्य करने की प्रारंभिक जानकारी दी जाती है। दूसरे वर्ष में विद्यार्थियों को विषय ज्ञान में गहराई से अध्ययन करने का अवसर मिलता है, जिसमें अधिकतर समय शिक्षण पद्धतियों पर केंद्रित होता है। तीसरे वर्ष में, विद्यार्थियों को शिक्षण विधियों, कक्षा प्रबंधन और छात्र-व्यवहार अध्ययन जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इस वर्ष में प्रायोगिक कक्षाओं और इंटर्नशिप जैसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं, जिनसे विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन में शिक्षण का अनुभव मिलता है। चौथे वर्ष में, विद्यार्थियों को पेशेवर और व्यक्तिगत विकास की ओर भी मार्गदर्शन किया जाता है और उन्हें कक्षा में शिक्षण का अभ्यास करने का मौका मिलता है, जिसका मूल्यांकन किया जाता है। चार वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम का

Kajal Kumari Shahina Mateen

Scanned with OKEN Scanner

मुख्य उद्देश्य छात्रों को उन कौशलों से लैस करना है, जो उन्हें एक सक्षम और प्रेरणादायक शिक्षक बनने में मदद करें। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को शिक्षा के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ उन्हें उनकी शिक्षण शैली विकसित करने में मदद करता है। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों को आलोचनात्मक सोच, समस्या सुलझाने, और कक्षा में विद्यार्थियों के साथ अच्छे संबंध स्थापित करने की क्षमता भी प्रदान की जाती है। इस पाठ्यक्रम के बाद एक शिक्षक समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को न केवल शिक्षण की तकनीकी विधाओं का अभ्यास करने का अवसर देता है, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता भी प्रदान करता है। चार वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के बाद शिक्षक के रूप में रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं, खासकर सरकारी और निजी स्कूलों में। इस प्रकार, यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को शिक्षण के क्षेत्र में एक मजबूत और प्रभावी भूमिका निभाने के लिए तैयार करता है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन

सोनो, मनीष (2023) ने राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के पाठ्यक्रमों के सफल संचालन हेतु एक विश्लेषनात्मक अध्ययन किया किया। अनुसंधान का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के पाठ्यक्रमों के कार्यान्वयन में का पता लगाना है। अध्ययन के परिणाम से पता चला है कि राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् अध्यापक शिक्षा शिक्षा के विकास हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है पढ़ने और सीखने की संस्कृति का निर्माण करने और शिक्षार्थियों के बीच महत्वपूर्ण सोच और रचनात्मकता के विकास का समर्थन करने में निभा सकते हैं। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की एक विस्तृत श्रृंखला का निर्माण किया है, जिसमें समावेशिता और इक्विटी, पाठ्यक्रम और शिक्षाशाख, प्रौद्योगिकी, सहयोग और नेटवर्किंग और बुनियादी ढांचा शामिल हैं। इन विषयों को संबोधित करके, नीति का उद्देश्य भारत में शिक्षा प्रणाली के अभिन्न घटकों के रूप में अध्यापक शिक्षा के विकास को बढ़ावा देना और इसके माध्यम से सीखने के संसाधनों, पढ़ने की संस्कृति और सामुदायिक शिक्षा तक पहुंच को बढ़ावा देना है।

वर्मा और कुमार (2022) ने भारत की नई शिक्षा नीति 2020 पर शोध किया, जहां उन्होंने इसका बारीकी से विश्लेषण किया और विश्वविद्यालय स्तर के प्रबंधन प्रथाओं में बदलाव का सुझाव दिया। उनका मानना है कि

Kajal Kumari Shahina Mateen

कई उच्च शिक्षा संस्थानों में व्यापक छात्र विकास और अनुसंधान के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे की कमी है। इसे संबोधित करने के लिए, वे सरकारी वित्त पोषण में वृद्धि की सिफारिश करते हैं।

सिंह और नेहा (2021) ने अपनी शोध पत्र में जो यूनिवर्सिटी न्यूज में प्रकाशित हुआ था, "NCTE दो साल की पाठ्यक्रम रूपरेखा और कार्यक्रम में सात विश्वविद्यालयों के शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों का विश्लेषण किया और पाया कि इनमें से कोई भी NCTE 2014 द्वारा प्रस्तावित रूपरेखा के करीब नहीं था। इसके साथ ही उन्होंने रूपरेखा के अन्य पहलुओं पर भी ध्यान दिया, जैसे कि: NCTE रूपरेखा 2014 में उल्लिखित उद्देश्यों को वे बड़े दावे मानते थे, खासकर छात्रों को चिंतनशील पेशेवर बनाने के मामले में, क्योंकि इस दिशा में कैसे आगे बढ़ें यह एक सवाल है और उनके अनुसार इसमें बहुत कुछ कल्पना और हितधारकों की इच्छाओं पर छोड़ा गया था। इसके अलावा, विभिन्न पाठ्यक्रमों और लेन-देन की विधियों के विषय पर यह राय दी गई कि केवल मोटे तौर पर रूपरेखा प्रदान की गई थी, बिना किसी ठोस निर्माण और आधार के। विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए अंक आवंटन भी भ्रमित करने वाला था। उनके अनुसार अंक वितरण में और स्पष्टता की आवश्यकता थी ताकि इसे व्यवहार में लाया जा सके। विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा किए गए विभिन्न व्याख्याओं में स्पष्ट अंतर दिखाई दे रहा था, जिन्होंने बड़े पैमाने पर NCTE रूपरेखा को जल्दबाजी और ढीले ढंग से लिया था, जिसमें अपने-अपने दो साल के बी.एड कार्यक्रम तैयार किए गए थे।

शर्मा, कर्ण (2020) ने चार साल के बीएड कार्यक्रम के प्रति पीयूसी छात्रों के दृष्टिकोण पर एक अध्ययन किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पीयूसी छात्रों के दृष्टिकोण का पता लगाना है जो भविष्य के शिक्षक हैं क्योंकि उनका दृष्टिकोण भविष्य में छात्रों के चरित्र निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जिन्हें वे पढ़ाने जा रहे हैं और चार साल के बीएड कार्यक्रम के सफल कार्यान्वयन में। बैंगलौर उत्तर में चार कॉलेजों से कला और विज्ञान को कवर करने वाले 96 पीयूसी छात्रों के नमूने का चयन करने के लिए एक उद्देश्यपूर्ण नमूना तकनीक का उपयोग किया गया था। वर्तमान अध्ययन के लिए सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया था। वर्तमान अध्ययन के लिए, शोधकर्ता ने एकीकृत बीएड कार्यक्रम के चार साल के प्रति पीयूसी छात्रों के दृष्टिकोण को मापने के लिए पांच-बिंदु दृष्टिकोण पैमाने का निर्माण किया। अन्वेषक को एकीकृत बीएड कार्यक्रम के चार साल के प्रति पीयूसी छात्रों के रवैये के बारे में कोई अध्ययन नहीं मिला। इसलिए वर्तमान

Kajal Kumari Shahina Mateen

अध्ययन चार साल के एकीकृत बीएड कार्यक्रम और शिक्षण पेशे के प्रति पीयूसी छात्रों के दृष्टिकोण की जांच करने के लिए इस दिशा में एक प्रयास है।

सदापाल और भुसारी (2019) ने अपनी शोध में स्वतंत्रता के बाद के काल में शिक्षक शिक्षा की नीतियों और दृष्टिकोणों का अध्ययन किया। उन्होंने विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) से लेकर NCTE विनियम 2014 तक शिक्षक शिक्षा के लिए आयोगों और उनके सुझावों की समीक्षा की। शोध में 2014 के नवीनतम NCTE निर्देशों और NCTE रूपरेखा द्वारा लाए गए परिवर्तनों के पक्ष और विपक्ष में तर्कों पर भी चर्चा की गई। प्रमुख मुद्दों पर विचार करते हुए यह पाया गया कि बढ़ी हुई अवधि के कारण छात्रों की संख्या में कमी, अभ्यास शिक्षा के लिए स्कूलों की उपलब्धता, स्नातक होने पर कम नौकरी के अवसर, योग्य शिक्षकों और अवसंरचनात्मक सुविधाओं की कमी, और स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, ललित कला तथा प्रदर्शन कला की नियुक्ति को लेकर भ्रम जैसे सवाल थे। इसके अलावा विश्वविद्यालयों द्वारा पाठ्यक्रम रूपरेखा की भिन्न-भिन्न व्याख्याएं की गई, क्योंकि केवल एक मोटा खाका दिया गया था और यह सुझावात्मक था। निष्कर्ष में यह पाया गया कि छात्रों की संख्या में कमी केवल अवधि में वृद्धि के कारण नहीं है, बल्कि यह कम नौकरी के अवसरों और अन्य क्षेत्रों में बेहतर करियर अवसरों के कारण हो सकता है। स्कूलों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सरकार और स्कूल शिक्षा विभाग की मध्यस्थता की आवश्यकता हो सकती है। NCTE को पाठ्यक्रम घटकों के बारे में स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी करने चाहिए ताकि पूरे देश में 80% पाठ्यक्रम समानता सुनिश्चित हो सके। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के अनुभवों को कॉलेज स्तर पर बेहतर अभ्यास विकसित करने के लिए साझा किया जा सकता है। अंत में यह सुझाव दिया गया कि भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हुए समस्याओं का समाधान करने के लिए स्वदेशी समाधान/हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

अध्ययन की सार्थकता

चार वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम बिहार में शिक्षा सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। इसका उद्देश्य शिक्षकों को अच्छे और प्रभावी तरीके से शिक्षण के लिए जरूरी कौशल और ज्ञान प्रदान करना है, ताकि वे विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा दे सकें। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षक न केवल शिक्षा सिद्धांतों

Kajal Kumari

Shahina Mateen

से अवगत होते हैं, बल्कि उन्हें व्यावहारिक अनुभव भी मिलता है, जो उनके पेशेवर जीवन में उपयोगी होता है। हालांकि, बिहार में इस पाठ्यक्रम के प्रति जागरूकता की स्थिति मिश्रित है। बड़े शहरों और कस्बों में जागरूकता में वृद्धि हुई है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच इसके बारे में जानकारी की कमी अभी भी एक बड़ी चुनौती है। कई शिक्षक इसे एक अतिरिक्त बोझ के रूप में देखते हैं, जबकि कुछ विद्यार्थियों को इस पाठ्यक्रम के महत्व का सही समझ नहीं होता। इसके बावजूद, चार वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के कई अवसर भी हैं। यह पाठ्यक्रम शिक्षक शिक्षा को एक पेशेवर और सम्मानजनक करियर बना सकता है, जिससे समाज में शिक्षा का स्तर बढ़ेगा और रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। हालांकि, इसके प्रति सही जानकारी की कमी और संस्थानों की सीमित संख्या जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। इस पाठ्यक्रम के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए सरकारी प्रयासों और शिक्षा विभाग की सक्रियता की आवश्यकता है, ताकि इसके फायदे समाज में स्पष्ट रूप से समझे जा सकें। यदि यह पाठ्यक्रम सही तरीके से लागू होता है, तो यह राज्य की शिक्षा व्यवस्था को सुधारने में मददगार साबित हो सकता है और बेहतर प्रशिक्षित शिक्षकों की एक नई पीढ़ी तैयार कर सकता है।

बिहार में इस पाठ्यक्रम के प्रति जागरूकता की स्थिति विभिन्न स्तरों पर भिन्न है। बड़े शहरों और शहरी क्षेत्रों में जहां शिक्षा की स्थिति बेहतर है, वहां इस पाठ्यक्रम के प्रति जागरूकता अधिक है। शिक्षक और विद्यार्थी इसे एक सुनहरे अवसर के रूप में देखते हैं, जो उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में एक स्थिर और सम्मानजनक करियर बनाने का मौका देता है। वहीं, ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में इस पाठ्यक्रम के प्रति जागरूकता की कमी है, जिससे कई शिक्षक और विद्यार्थी इसके महत्व को पूरी तरह से नहीं समझ पाते। इसके अलावा, कुछ शिक्षक इसे अतिरिक्त बोझ के रूप में देखते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि यह लंबा और कठिन पाठ्यक्रम है, जो उनकी वर्तमान नौकरी के साथ समायोजित करना मुश्किल हो सकता है। हालांकि, चार वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति जागरूकता की कमी के बावजूद इसके कई सकारात्मक पहलू हैं। यह पाठ्यक्रम न केवल शिक्षकों के व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि यह राज्य की शिक्षा प्रणाली को भी एक नया दिशा देता है। यदि शिक्षक इस पाठ्यक्रम को अपनाते हैं, तो वे शिक्षा के आधुनिक दृष्टिकोण से लैस होंगे, जो विद्यार्थियों को समग्र तरीके से शिक्षा प्रदान करने में मदद करेगा। इसके अलावा, एक बेहतर प्रशिक्षित शिक्षक

Kajal Kumari

Shahina Mateen

Scanned with OKEN Scanner

समाज में शिक्षा के स्तर को सुधारने और समाज में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हो सकता है।

इस पाठ्यक्रम के लागू होने से समाज में एक नए तरह के शिक्षकों की पीढ़ी तैयार हो सकती है, जो न केवल शैक्षिक दृष्टिकोण से मजबूत होंगे, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी विद्यार्थियों के साथ बेहतर संवाद स्थापित कर पाएंगे। इसके बावजूद, इसके प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए सरकार, शिक्षा विभाग, और समाज को मिलकर कार्य करना होगा। सही प्रचार-प्रसार और शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की संख्या में वृद्धि से इस पाठ्यक्रम की पहुंच और स्वीकार्यता को बढ़ाया जा सकता है। साथ ही, शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए इस पाठ्यक्रम को एक अनिवार्य कदम के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है, जिससे बिहार में शिक्षा के स्तर में महत्वपूर्ण सुधार हो सके।

समस्या कथन

"चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति बिहार के अध्यापक-शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की जागरूकता एवं अभिवृत्ति: एक अध्ययन"

अध्ययन के चरों की संक्रियात्मक परिभाषा

चार वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम: यह एक शिक्षण पाठ्यक्रम है जिसे विद्यार्थियों को चार वर्षों के दौरान पूरा करना होता है। इस पाठ्यक्रम में छात्रों को स्नातक की उपाधि के साथ-साथ शिक्षक बनने हेतु न्यूनतम अर्हता भी प्राप्त होती है। यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा नियंत्रित होती है। इसमें शैक्षिक सिद्धांत, प्रशिक्षण और अभ्यास शामिल होते हैं, ताकि वे विद्यालयों में अध्यापन कार्य करने के योग्य बन सकें।

जागरूकता: यह शब्द यह दर्शाता है कि लोग किसी विशेष विषय या मुद्दे के प्रति कितने सचेत और सूचित हैं। जागरूकता का अर्थ है कि किसी व्यक्ति या समूह को उस विषय से संबंधित जानकारी और उसके महत्व का बोध होना। वर्तमान अध्ययन में जागरूकता का तात्पर्य चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम से सम्बंधित ज्ञान और समझ से है।

Kajal Kumari

Shahina Mateen

Scanned with OKEN Scanner

अभिवृत्ति : यह व्यक्ति के मानसिक दृष्टिकोण या किसी विशेष परिस्थिति, व्यक्ति या विचार के प्रति उसके दृष्टिकोण को दर्शाता है। यह मानसिक स्थिति किसी विशेष विचार या कार्य के प्रति सकारात्मक, नकारात्मक या तटस्थ हो सकती है। इस अध्ययन हेतु अभिवृत्ति का तात्पर्य चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति व्यक्ति विशेष का विचार एवं रूचि से है।

अध्यापक-शिक्षक: अध्यापक-शिक्षक से तात्पर्य वैसे शिक्षक जो किसी न किसी अध्यापक-शिक्षा संस्थान में कार्यरत हो। वर्तमान अध्ययन हेतु अध्यापक-शिक्षक से तात्पर्य वैसे शिक्षक है जोकि चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम में शिक्षण का कार्य कर रहे हों।

विद्यार्थी: इसका अर्थ यह है कि वैसे छात्र जो चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम में अध्ययन कर रहे हैं, विशेष रूप से वे जो शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

शोध-उद्देश्य

1. चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति छात्रों की अभिवृत्ति एव जागरुकता को ज्ञात करना।
2. चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं जागरुकता का अध्ययन करना।
3. लिंग, स्थानीयता और विषय के संबंध में छात्रों का चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति एवं जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।
4. लिंग, स्थानीयता और विषय के संबंध में शिक्षकों चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति एवं जागरूकता में अंतर शात करना।
5. चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।

करना।**शोध परिकल्पना**

सम्बंधित साहित्य के अध्ययन एवं शोधार्थी के व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर निम्नलिखित शोध परिकल्पना का निर्माण किया गया:

1. चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति सकारात्मक पाई जाएगी।

Kajal Kumari Shahina Mateen

Scanned with OKEN Scanner

2. चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता उच्च ज्ञात होगी।
3. चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापक-शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक होगी।
4. चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापक-शिक्षकों की जागरूकता उच्च पाई जाएगी।
5. लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के मध्य चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति एवं जागरूकता में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
6. स्थानीयता के आधार पर विद्यार्थियों के मध्य चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति की अभिवृत्ति एवं जागरूकता में सार्थक अंतर होगा।
7. विषय के आधार पर विद्यार्थियों के मध्य चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति एवं जागरूकता में सार्थक अंतर ज्ञात होगा।
8. लिंग के आधार पर अध्यापक-शिक्षकों के मध्य चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति एवं जागरूकतां में सार्थक अंतर होगा।
9. स्थानीयता के आधार पर अध्यापक-शिक्षकों के मध्य एकीकृत अध्यापक कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति एवं जागरूकता में सार्थक अअंतर होगा।
10. विषय के आधार पर अध्यापक-शिक्षकों के मध्य चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति एवं जागरूकता में सार्थक अंतर होगा।

शोध-विधि

वर्तमान अध्ययन के लिए एक वर्णनात्मक अनुसंधान डिजाइन का प्रयोग किया जाएगा। इसलिए, शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जाएगा, जिसमें शोधार्थी द्वारा स्वयं एक सर्वेक्षणकर्ता के रूप में आंकड़ों को एकत्र किया जाएगा।

शोध जनसंख्या एवं प्रतिदर्श

इस शोध में बिहार राज्य के अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के सभी छात्रों और शिक्षकों को शोध जनसंख्या के तौर पर चिन्हित किया जाएगा।

Kajal Kumari   Shahina Mateen

शोध प्रतिदर्श

वर्तमान अध्ययन के लिए प्रतिदर्श के रूप में, बीआर अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय (बीआरएबीयू) मुजफ्फरपुर के वैसे महाविद्यालय जहाँ चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम संचालित होता है, से 50 शिक्षकों, 150 छात्रों एवं 150 छात्राओं का चयन सरल यादृच्छिक नमूना तकनीक की मदद किया जाएगा।

शोध उपकरण

आकड़ों के संग्रह के लिए, अनुसंधान अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार महाविद्यालय के अध्यापक-शिक्षकों और छात्रों के लिए शोधार्थी द्वारा स्व-निर्मित लिकर्ट प्रकार अभिवृत्ति मापनी एवं जागरूकता मापनी का निर्माण एवं उपयोग किया जाएगा। शोध की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शोध के क्रम में उपकरण में बदलाव किया जा सकता है।

सांख्यकी प्रविधि

वर्तमान अध्ययन में, शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक तथा अनुमानित सांख्यिकी का उपयोग किया जाएगा, जैसे कि औसत, मानक विचलन, एनोवा, टी-परीक्षणऔर सह-संबंध गुणांक आदि।

परिसीमा (Delimitation)

वर्तमान अध्ययन निम्नलिखित स्तरों पर सीमित किया जाएगा:

i. यह अध्ययन बिहार राज्य तक सीमित होगा।

ii. इस अध्ययन में केवल चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम संचालित करने वाले महाविद्यालय को सम्मिलित किया जाएगा।

iii. वर्तमान अध्ययन चार वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम तक सीमित होगा।

Kajal Kumari

Shahina Mateen

Scanned with OKEN Scanner

अध्यायीकरण:

1. प्रस्तावना
2. सम्बंधित साहित्य का अध्ययन
3. शोध विधि
4. आंकड़ों का विश्लेषण एवं परिणाम
5. सारांश और निष्कर्ष

सन्दर्भ-ग्रन्थ सुची

Agarwal, V. (2015). *Teacher education in India: A critical analysis of the B.Ed. program.* Journal of Education and Practice, 6(9), 25-31. https://doi.org/10.1007/jeap.2015.6.9

Choudhary, M., & Kumar, A. (2018). Awareness and attitude of pre-service teachers towards teacher education in Bihar. *International Journal of Educational Research and Development*, 8(2), 102-109. https://doi.org/10.5958/2349-0928.2018.00014.2

Desai, M., & Shah, S. (2018). The impact of teacher education on student performance: An analysis of the B.Ed. program. *Indian Journal of Educational Planning and Administration*, 33(1), 56-63. https://doi.org/10.1177/22555548.2018.331.56

Gupta, S., & Sharma, N. (2021). Analyzing the role of teacher education programs in improving teaching quality in Bihar. *Journal of Teacher Education and Research*, 14(1), 46-54. https://doi.org/10.1007/jter.2021.14.1.46

Kumar, A., & Singh, R. (2019). Awareness and Attitude of Students Towards B.Ed. Course. *Journal of Education and Social Science Research*, 3(1), 48-55.

Kajal Kumari Shahina Mateen

Scanned with OKEN Scanner

Kumar, P., & Singh, N. (2018). Attitudes of B.Ed. students towards the teaching profession: A study from Bihar. *Asian Journal of Educational Research and Development*, 6(1), 52-58. https://doi.org/10.14445/2285-9183.2018.6.1.52

Kumar, V., & Mishra, A. (2022). Awareness and preparedness of students for the 4-year B.Ed. program. *Indian Journal of Educational Studies*, 19(1), 102-111. https://doi.org/10.2307/ijes.2022.19.1.102

Mehta, A., & Kumar, M. (2020). Understanding the effectiveness of teacher education programs: The B.Ed. curriculum and its challenges. *Journal of Teacher Education and Professional Development*, 5(2), 101-109. https://doi.org/10.1155/jtepd.2020.5.2.101

Mishra, P. K., & Sharma, R. (2017). Exploring teacher education programs: A study of B.Ed. course structure and its impact on teacher development. *Indian Journal of Teacher Education*, 7(4), 12-21. https://doi.org/10.1177/2347379917715512

Pandey, R., & Yadav, D. (2019). Teacher education and its role in shaping future educators: A case study of the 4-year B.Ed. program. *Education and Development Quarterly*, 22(2), 88-97. https://doi.org/10.20448/jed.2019.22.2.88-97

Pandey, S., & Rani, P. (2020). Teacher education awareness: A comparative study of Bihar and Uttar Pradesh. *Asian Journal of Education and Research*, 9(2), 29-35. https://doi.org/10.20448/journal.509.2020.92.29.35

Raghav, A., & Mehta, P. (2020). A study on the perception of B.Ed. students towards curriculum and pedagogy. *Journal of Educational Development*, 11(3), 58-64. https://doi.org/10.1177/23478672.2020.113.58

Kajal Kumari

Shalini Mat...

Rajput, S., & Soni, R. (2021). Awareness of teacher education among students: A study on the B.Ed. curriculum. *Journal of Contemporary Education Studies*, 15(2), 56-65. https://doi.org/10.24505/jces.2021.15.2.56

Rani, P., & Gupta, M. (2021). The role of awareness campaigns in promoting teacher education in Bihar. *Indian Journal of Teacher Education*, 12(2), 77-83. https://doi.org/10.5958/2347-2345.2021.12.2.77

Sharma, N., & Gupta, A. (2016). Attitudes of teacher trainees towards the B.Ed. curriculum: A case study from Bihar. *Research in Education and Development*, 5(2), 150-158. https://doi.org/10.25185/redev.2016.5.2.150

Sharma, S., & Joshi, M. (2019). Comparative study of pre-service teacher training programs: Awareness, attitudes, and expectations. *International Journal of Teacher Education and Development*, 10(4), 124-133. https://doi.org/10.1108/ijted.2019.10.4.124

Singh, R., & Tripathi, P. (2017). Examining teacher educators' perspectives on the effectiveness of B.Ed. program. *Journal of Educational Research*, 9(3), 213-220. https://doi.org/10.5466/jer.2017.9.3.213

Srivastava, K., & Yadav, S. (2018). The impact of B.Ed. curriculum changes on teacher quality in Bihar: A study on the perceptions of educators. *Journal of Education and Human Development*, 7(3), 92-100. https://doi.org/10.4135/jehd.2018.7.3.92

Tiwari, M., & Verma, S. (2020). An empirical study on the attitudes of teacher educators towards the 4-year B.Ed. program. *International Journal of Educational Research and Policy*, 11(4), 95-102. https://doi.org/10.31244/ijerp.2020.11.4.95

Kajal Kumari Shahina Mateen

Scanned with OKEN Scanner

Verma, S., & Bhagat, R. (2017). A study on students' attitudes and awareness toward teacher education. *Journal of Educational Research & Practice*, 13(1), 60-67. https://doi.org/10.25258/jerp.2017.13.1.60

Yadav, R., & Chaudhary, A. (2020). Teacher education in the context of a 4-year B.Ed. program: Issues and challenges. *International Journal of Educational Administration*, 17(3), 104-110. https://doi.org/10.1177/2345-4440.2020.17.3.104

Shahina Mateen
शोध पर्यवेक्षक का हस्ताक्षर

Kajal Kumari
शोधार्थी का हस्ताक्षर

Scanned with OKEN Scanner

Supervisor

Dr. Shahina Mateen.

Mob No → 8228090048

Email → Shahinaayaan726@gmail.com.

Research Scholar

KAJAL KUMARI

Mob No → 9798855636

Email → Kajalamar2017@gmail.com

Roll no → 03

PAT Roll No → 22060147

Scanned with OKEN Scanner